भक्तिकाल

वाणी और विचार

सम्पादक

डॉ. राजेन्द्र यादव

अवधेश कुमार

Scanned with CamScanner

भक्तिकाल

वाणी और विचार

सम्पादक
डॉ. राजेन्द्र यादव
अवधेश कुमार

विजया बुक्स

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

□ प्रस्तावना

□ भूमिका

1. भक्तिकाव्य का रचना-संसार — प्रो. वीरेन्द्र मोहन 15

2. इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिन हिन्दुन वारिए — प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 19

3. कबीर का समाज दर्शन — प्रो. चन्दा बैन 33

4. 'रामचरितमानस' की वर्तमान सांस्कृतिक भूमिका — डॉ. पंकज चतुर्वेदी 39

5. भक्ति साहित्य का समाज दर्शन — डॉ. राजेन्द्र यादव 57

6. कबीर का समन्वयवाद — डॉ. आशुतोष 66

7. कबीर की प्रासंगिकता का प्रश्न — डॉ. हिमांशु कुमार 71

8. संत रविदास की भक्ति में बेगमपुर की अभिव्यक्ति — डॉ. अरविन्द कुमार 76

9. भक्तिकाल : मीराबाई और स्त्री संघर्ष — डॉ. मनीष कुमार 82

10. मीराबाई : जीवन और भक्ति सन्दर्भ — डॉ. छबिल कुमार मेहेर 90

11. भ्रातृत्व के आदर्श : राम और भरत — डॉ. सरोज गुप्ता 97

12. रामकथा का कालजयी ग्रन्थ 'श्रीरामचरितमानस' — डॉ. घनश्याम भारती 102

13. सूरदास और उनके काव्य में भक्ति की लहरें! — अवधेश कुमार 106

14. कबीर : सामाजिक समरसता के क्रांतिकारी संत — डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा 119

Scanned with CamScanner

कबीर की प्रासंगिकता का प्रश्न

डॉ. हिमांशु कुमार

कहते हैं कि सृष्टि पल-पल परिवर्तित हुआ करती है। एक क्षण दूसरे में पर्यवसित होता रहता है। इक्कीसवीं शताब्दी से लगभग 600 साल पहले के संत कवि कबीर जो अपनी कविता में तत्कालीन स्थितियों, दबावों और चिंताओं को महसूस कर रहे थे और फिर भी सृजनरत थे- आज भी उतने ही प्रासंगिक क्यों है? कहीं ऐसा तो नहीं कि भारतीय समाज आज भी उस मध्यकालीन जड़ता से बाहर नहीं निकल पाया है, जबकि हम रोज यह दावा किये जा रहे हैं कि हम इक्कीसवीं शताब्दी के उत्तर आधुनिक समय में जी रहे हैं, जहाँ सब कुछ ठीक है और अच्छे दिन भी हैं। क्या आज का समाज फिर से उसी मध्यकाल में नहीं लौट गया है? क्या हम आज भी उस कठमुल्लेपन, पाखंडवाद, बाह्याडम्बर, मनुष्य के श्रम की अवमानना, रूढ़ियुक्त संकीर्णता, मंदिर-मस्जिद-काबा-कैलास के झगड़े, झूठ के बोलबाले, हत्या इत्यादि से मुक्त हो पाये हैं। उत्तर है नहीं। ऐसे में "मसि कागद छुयो नहीं, कलम गह्यौ नहीं हाथ" वाले कबीर याद आते हैं।

किसी भी कवि या रचनाकार की प्रासंगिकता के सूत्र उसके अपने समय के बीचो-बीच छिपे होते हैं। रचनाकार कालजयी तब बनता है जब वह अपनी रचनाओं में अपने युग-समय की प्रतिध्वनि सुनता है तथा भविष्य के समय पर भी अपनी पदचाप छोड़ जाता है। उसकी रचनाओं की प्राणवान गंध बराबर यात्रा करती रहती है तथा भविष्य के साथ और भी प्रासंगिक होती जाती है। कबीर ऐसे ही कालजयी रचनाकार हैं जो आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं।

आज जब चारों ओर एक नई तरह की सामाजिक जड़ता तथा अराजकता का दौर है। हमारा पूरा समय बाज़ारवाद के चंगुल में है। भूमण्डलीकरण की आँधी चल रही है। दुनिया वैश्वीकरण के आगोश में है। सत्ता और बाजार के गठजोड़ से समाज में एक नये समीकरण का उदय हो रहा है। मीडिया (सोशल, इलेक्ट्रानिक

Scanned with CamScanner